



# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5

अंक : 11

जुलाई-2018

मूल्य : ₹2.00



पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

## कुलपति सन्देश

# जल ही जीवन है !



प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान और पशुपालक भाई व बहिनों !  
राम-राम सा ।

“पानी जीवन के लिए आवश्यक है। हमारी संस्कृति में प्रत्येक मांगलिक कार्य में जल की पूजा की जाती है। वर्षा जल का संग्रहण और जल की बचत करना समय की मांग है। हालांकि पृथ्वी लगभग 71 प्रतिशत जल से घिरी हुई है किन्तु ऐसा आंकलन है कि 1 प्रतिशत से भी कम पानी पृथ्वी पर पीने लायक है। ऐसी स्थिति में हमें अपने जीवन में जल के महत्व को दरकिनार नहीं करना चाहिए और हर संभव जल संरक्षण के उपायों को अपनी आदत में डालना चाहिए। 19वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान 11.27 प्रतिशत पशुधन के साथ देश में दूसरे स्थान पर है। इसके अलावा प्रदेश में वन्य जीवों की भी विभिन्न प्रजातियां बढ़ी संख्या में मौजूद हैं। पशुधन और वन्य प्राणियों के लिए पेयजल के प्रमुख स्रोत तालाब, झील, जोहड़ और नदियां हैं। इनका समुचित रख-रखाव हमारी नैतिक जिम्मेवारी है। भूमिगत जल स्तर में लगातार कमी से पारंपरिक कुए, नलकूप और बावड़ियों में भी पानी की आवक कम हो रही है। राज्य सरकार के स्तर पर लागू जल संरक्षण अभियान और जन सहभागिता से वर्षा जल संरक्षण और जल बचत कार्यक्रमों से लोगों में जागरूकता आई है। बरसात का मौसम शुरू हो चुका है। वर्षा जल हमारे लिए अमृत तुल्य है अतः सभी किसान और पशुपालक भाई और बहिनों को अपने यहां इसके संरक्षण के उपायों को पूरी शिद्दत के साथ लागू करना चाहिए। गांव के तालाब, बावड़ियों, खेतों में टांके और घरों के कुंड में वर्षा के जल संग्रहण करने में सहयोगी बनकर अपना योगदान अवश्य करें। वर्षा में वृक्षारोपण से भी हमें दोहरे-तिहरे लाभ होते हैं। अतः गोचर, गांव व खेतों में पौधारोपण अभियान में भी सक्रिय भागीदारी हम सब के हित में है।

वेटेनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में वर्षा जल संरक्षण का “राजुवास मॉडल” तैयार किया गया है। इसके मुख्य परिसर में बरसाती पानी की एक-एक बूंद को संचित करने की व्यवस्था की गई है। विजय भवन पैलेस के 60 हजार वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बरसाती पानी को पाईप लाइन व फिल्टर चैम्बर के जरिए विशाल जलकुंडों में संग्रहण किया जाता है। इसके लिए 9.5 लाख लीटर जल क्षमता के 5 आर.सी.सी. के भूमिगत टैंक बने हैं। ये भूमिगत टैंक विश्वविद्यालय परिसर के अलग-अलग स्थानों पर स्थित हैं। ये सभी टैंक इमारतों की छतों से बारिश का पानी एकत्रित करने के लिए चैनलों के माध्यम से जुड़े हैं। इन टैंकों के पूरे भर जाने की स्थिति में साफ अतिरिक्त



वेटेनरी विश्वविद्यालय एवं स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा को 27 जून 2018 को जयपुर में राजस्थान एज्युकेशन लीडरशिप अवार्ड 2018 से सम्मानित किया गया।

जल को सूखे कुए की ओर प्रवाहित किया जाता है जिससे भूमिगत जल स्तर का पुनर्भरण हो सके। परिसर की सड़कों के सतही वर्षा जल की उपयोगिता को भी सुनिश्चित किया गया है। जल हमारे जीवन की एक मूलभूत आवश्यकता है अतः जल बचत की आदत से समग्र जीव-जगत का भला होगा। जीवन को इस पृथ्वी पर बनाए रखने के लिए हम सब को बेहतरीन प्रयास करना चाहिए।

जय हिन्द!

( प्रो. बी. आर. छीपा )





## मुख्य समाचार

### इग्नू से डेयरी और मीट टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा का वेटरनरी कॉलेज बना स्टडी सेन्टर

वेटरनरी विश्वविद्यालय में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा एक वर्षीय डेयरी टेक्नोलॉजी तथा मीट टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा में शुरू किया है। वेटरनरी कॉलेज बीकानेर में इग्नू के स्टडी सेन्टर के प्रोग्राम प्रभारी प्रो. आर.एन. कच्छवाहा ने बताया कि डिप्लोमा पाठ्यक्रम युवा, सेवारत टेक्नीशियन/वर्कर, लघु और मध्यम डेयरी/पोल्ट्री उद्यमी, राज्य डेयरी विभागों के कार्मिक, डेयरी/पोल्ट्री, पशुपालक और किसानों के लिए है। इसके लिए 10+2 कक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी या अनौपचारिक शिक्षा अथवा 10वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए भी नामांकन का प्रावधान किया गया है जो छः माह के बैचलर प्रीपेरेटरी प्रोग्राम को सफलतापूर्वक पूरा कर लेंगे। पाठ्यक्रम के बारे में संपूर्ण जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

### प्रो. ए.पी. सिंह इन्डियन वेटरनरी मेडिसिन सोसाइटी के उपाध्यक्ष निर्वाचित

वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के वेटरनरी मेडिसिन प्रोफेसर एवं प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह इन्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी मेडिसिन के उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हैं। अप्रैल-मई 2018 में पूरे देश में सोसाइटी की कार्यकारिणी के निर्वाचन के लिए हुए मतदान का परिणाम घोषित किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रो. सिंह का इस पद पर 3 वर्ष का कार्यकाल रहेगा। वेटरनरी कॉलेज, नवानियां के सह आचार्य डॉ. शिव कुमार शर्मा सोसाइटी के साइंटिफिक जर्नल के संपादक बोर्ड के सदस्य रूप में निर्वाचन हुआ है। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. शर्मा ने कहा कि उनके निर्वाचन से वेटरनरी मेडिसिन के विकास और अनुसंधान कार्यों में राजुवास की प्रमुख भूमिका रहेगी। इन्डियन वेटरनरी मेडिसिन सोसाइटी की 37वीं कन्वेंशन का आयोजन राजुवास में डॉ. सिंह के नेतृत्व में फरवरी-2019 में किया जाना है।

### राजुवास वैज्ञानिकों द्वारा

### आर.डी. 820 पर 50 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु विविधिकरण सजीव मॉडल द्वारा 13 जून को कोलायत के आर.डी. 820 पर एक दिवसीय पशुपालक शिविर का आयोजन किया गया। प्रमुख अन्वेषक प्रो. बसंत बैस ने बताया कि इस शिविर में 50 कृषक पशुपालक शामिल हुए। ग्रीष्म ऋतु में विभिन्न पशु प्रजातियों की देखरेख और प्रबंधन विषय पर डॉ. सी.एस. ढाका, डॉ. संजयसिंह और डॉ. लोकेश टॉक ने रोगों की पहचान और उपचार तथा पोषण पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

### कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक समीक्षा कार्यशाला में राजुवास की सहभागिता

राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली के कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक समीक्षा कार्यशाला का आयोजन 10-12 जून, 2018 को स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में आईसीएआर-अटारी, जोधपुर द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें राजुवास, बीकानेर के एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के शस्य विशेषज्ञ भैरुसिंह चौहान द्वारा बाजरे की उन्नत खेती व गृह विज्ञान विशेषज्ञ अंजलि शर्मा द्वारा लिखित मुरब्बा बनाने की विधियों की पुस्तिका का विमोचन कार्यशाला के दौरान किया गया। विमोचन के दौरान डॉ. एस.के. सिंह, निदेशक, आईसीएआर-अटारी, जोधपुर, प्रो. बी.आर. छीपा,

कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, एवं राजुवास, बीकानेर, डॉ. गोपाल लाल, निदेशक, एनआरसीएसएस, अजमेर, निदेशक, प्रसार शिक्षा, राजुवास, उपस्थित थे। कार्यशाला में वर्ष 2017-18 की गतिविधियों का प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रतिपादन किया गया। डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा, प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर, डॉ. मनोहर सैन, कार्यक्रम समन्वयक, केवीके, नोहर, डॉ. भैरुसिंह चौहान, शस्य विशेषज्ञ एवं राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयक उपस्थित रहे।

### 47 विद्यार्थियों ने राजुवास का भ्रमण कर जानी पशुपालन की तकनीकें

राजस्थान राज्य भारत स्काउट-गाइड द्वारा डिसेंट किड्स गंगाशहर में कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत 14 जून को 47 विद्यार्थियों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। विद्यार्थियों ने पशु शरीर रचना विज्ञान विभाग, पशु जैव विविधता मॉडल और कुक्कुटशाला, क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स और म्यूजियम का अवलोकन कर पशुचिकित्सा और उपचार की विभिन्न तकनीकों की जानकारी ली। डॉ. अशोक डांगी, डॉ. पंकज थानवी और डॉ. पंकज मिश्रा ने छात्रों को विस्तृत जानकारी दी। डिसेंट किड्स के प्रधानाध्यापक गिरीराज खैरीवाल के नेतृत्व में 8 शिक्षक भ्रमण कार्यक्रम में शामिल हुए।

### राज्य आपदा रेस्पांस फोर्स के 54 जवानों का पशु आपदा प्रबंधन पर प्रशिक्षण सम्पन्न

राजुवास के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र में राज्य की आपदा रेस्पांस फोर्स के 54 युवा कांस्टेबल के दो बैच का 10 दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हो गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं से जन-धन और पशुओं को बचाकर शीघ्र राहत पहुँचाना एक पुनीत कार्य है। राहत कार्यों में जुटे जवानों के लिए ज्ञान और शारीरिक कुशलता के साथ ही सेवा का जज्बा होना बहुत जरूरी है। पशुधन हमारे लिए कीमती और आर्थिक संबल है अतः बाढ़, आग और तूफान जैसी आपदाओं में उसकी सुरक्षा के प्रबंधन कार्यों में भी कुशलता जरूरी है। इस अवसर पर वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने कहा कि फोर्स के जवानों का यह विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम है क्योंकि आपदा की स्थिति में उनकी संकटमोचक की भूमिका है। पशु शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ प्रो. टी.के. गहलोत ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा नीति में भी पशुओं की सुरक्षा को भी सुनिश्चित किया गया है। आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि राज्य आपदा रेस्पांस फोर्स के 54 जवानों को प्रशिक्षण दिया गया है।

### अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के दीवाने आम में 21 जून को प्रातः 6:30 बजे वेटरनरी कॉलेज के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर योगाभ्यास किया तथा शपथ ग्रहण की। इस अवसर पर वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने योगाभ्यास में भाग लिया। अधिष्ठाता प्रो. शर्मा ने शिविर में अपने सम्बोधन में कहा कि भारत विश्व में योग गुरु है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। योग का नियमित अभ्यास शारीरिक व मानसिक रूप से व्यक्ति को चुस्त बनाए रखता है। अतः इसे दिन चर्या में शामिल करें। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. शर्मा ने एन.सी.सी. के 'सी' सर्टिफिकेट योग्यता प्राप्त कैडेट्स को प्रमाण पत्र प्रदान किए।





केन्द्रीय जल संसाधन राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल 23 जून 2018 को जिले में वर्षा जल संरक्षण कार्य में योगदान के लिए वेटेनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा और राजुवास के कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच को सम्मानित करते हुए

# प्रशिक्षण समाचार

### वीयूटीआरसी चूरु द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरु द्वारा 7, 8, 14, 19, 21, 25 एवं 26 जून को गांव बलाल, ढाढरिया चारनान, गागड़वास, हरदेसर, बॉय, बीजरासर एवं कोटवाद ताल गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 247 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 8, 13, 15 एवं 25 जून को गांव रंगमहल, 4-सी छोटी, भोजेवाला एवं मोरजन्डा खरी गांवों में तथा दिनांक 14 एवं 21-22 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 08 महिला पशुपालकों सहित 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### सिरोही केन्द्र द्वारा 269 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही द्वारा 8, 13, 14, 15, 22, 25 एवं 26 जून को गांव साबेला, बलवन्तगढ़, दूनाकाकर, केदार पादर, धवली, उम्मेदगढ़ एवं लोटीवाड़ा गांवों में तथा 27 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 269 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया-लाड़नू द्वारा 7, 8, 11, 13, 14, 15, 18 एवं 20 जून को गांव आजवा, सींवा, पालोह, नोरंगपुरा, नन्दवान रणसीसर, गर्देस्य बासनी एवं भवादिया गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 16 महिला सहित 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर द्वारा 15, 20, 21 एवं 25 जून, 2018 को गांव रघुनाथपुरा, कनोज, बान्दनवाड़ा एवं हिंगोनिया गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी, झुंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंगरपुर द्वारा 13, 15, 18, 20, 22 एवं 25 जून को गांव बोकड़ सेल, तलाईयां, खेरमाल, बिलोड़ा,

कांकरी झुंगरी एवं बरोदा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 234 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 6, 7, 11, 12, 14, 18, 19, 21, 22 एवं 27 जून को गांव खोह, पीदावली, बयारी, मिल्सवा, धौरमुई, गुनसारा, अलीपुर, टोड़ा, मोरदा, सबलाना एवं नगला मैथना गांवों में तथा दिनांक 26 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 18 महिला पशुपालक सहित कुल 202 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., टोंक द्वारा 12, 13, 14, 21, 22, 25, 26 एवं 27 जून को गांव दूनी, जूनियां, आवां, बंथली, जलसिना, चांदसिहपुरा, हरभगतपुरा एवं टोपा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 192 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर द्वारा 13, 15, 18, 25 एवं 27 जून को गांव गिरीराजसर, गड़ियाला, दियातरा, ढाणी छिपलाई तथा साबणीया गांवों में तथा 29 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 196 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 12, 15, 18, 19, 20, 25, 26 एवं 27 जून को गांव राजपुरा, बैसर, ढाबा, किशनपुरा, नापाहेड़ा, भगवानपुरा, बंधा, पीपल्दा बीरम तथा खेड़ी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 281 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 265 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 6, 8, 14, 15, 20 एवं 23 जून को गांव नगरी, बनिना, राजपूरया, गिलूड खेड़ा, खारखंदा एवं चौथपूरा गांवों में तथा दिनांक 12, 19, 22 एवं 26 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 265 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 327 पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा 19, 20, 21, 22, 25 एवं 26 जून को गांव नोरंगाबाद, फूलपुरा, कुरेंदा, लालू का पुरा, चितोरा, ठेकुली एवं पथरोला गांवों में तथा दिनांक 28 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 327 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर द्वारा 22, 23, 25, 26, 28 एवं 29 जून को गांव मणाई, जाखड़ो की ढाणी, बासनी करवड़, गोलासनी, रूपावतों का बेरा एवं खोखरी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 195 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 11-14 को गांव परलीका में चार दिवसीय तथा 20-23 एवं 27-30 को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 56 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।



## पंचगव्य उत्पाद: गौदधि ( गाय का दही )

देशी गाय का दही या योगर्ट एक दुग्ध-उत्पाद है जिसे दूध के जीवाण्विक किण्वन के द्वारा बनाया जाता है। दही जमाने की क्रिया में दूध की शर्करा लैक्टोज के किण्वन से लैक्टिक अम्ल बनता है, जो दूध के प्रोटीन पर कार्य करके इसे दही की बनावट और दही की विशिष्ट लाक्षणिक खटास देता है। ये एक नैचुरल प्रोबायोटिक है जो पेट को स्वस्थ रखने में मदद करता है और यह पोषण की दृष्टि से प्रोटीन, कैल्सियम, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी-6 और विटामिन बी-12 में से समृद्ध है। वृद्ध जनों में और जिन्हें दूध नहीं पचता उनके लिए दही/छाछ, दूध का पोषण प्राप्त करने का एक अच्छा विकल्प है। जो लोग लैक्टोज के लिए असहिष्णु होते हैं, वे बिना किसी हानिकारक प्रभाव के दही का लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि दूध में उपस्थित लैक्टोज को जीवाणु संवर्द्धन और किण्वन क्रिया के द्वारा लैक्टिक अम्ल में बदल दिया जाता है।

### दही के भारतीय मानक

गुणधर्म	भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई.) रेगुलेशन 2011	भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस.)
अम्लता प्रतिशत (लैक्टिक अम्ल)	-----	0.6-0.8
टोटल प्लेट काउंट	दस लाख/ग्राम से अनधिक	
कोलाइफॉर्म काउंट	अधिकतम दस/ग्राम	अधिकतम दस/ग्राम
ई. कोलाइ जीवाणु	1 ग्राम में अनुपस्थित	
साल्मोनेला जीवाणु	25 ग्राम में अनुपस्थित	
शिगेल्ला जीवाणु	25 ग्राम में अनुपस्थित	
स्टेफायलोकॉकस औरियस जीवाणु	100/ग्राम से अनधिक	
यीस्ट और फंगूदी	अधिकतम 100/ग्राम	अधिकतम 100/ग्राम
अवायुजीवी बीजाण	1 ग्राम में अनुपस्थित	
लिस्टेरिया मोनोसायटोजेन्स जीवाणु	1 ग्राम में अनुपस्थित	
फॉस्फेटेज टेस्ट		नकारात्मक
अन्य अपेक्षित गुणधर्म	दुग्ध स्रोत पर लागू मानक न्यूनतम फ़ैट और एस.एन.एफ. प्रतिशत मानक उसके दही पर भी लागू होंगे। दुग्ध स्रोत घोषित नहीं करने पर भैंस के दूध पर लागू मानक प्रभावी रहेंगे।	एफ.एस.एस.ए.आई. रेगुलेशन 2011 के अनुसार न्यूनतम फ़ैट और एस.एन.एफ. प्रतिशत मानक दही पर लागू होंगे।

दही जमाने का कार्य परम्परागत रूप से वर्षों से सबके घरों में होता है लेकिन आधुनिक समय की मांग और मानकों को ध्यान में रख कर किस प्रकार एक लीटर दूध का दही जमायें, उसका तरीका आपको बताते हैं—

- एक लीटर दूध। यदि आप 'अल्ट्रा हाई पाइश्चुराइज्ड' अर्थात 'यू.एच.पी.' अथवा 'यू.एच.टी.' दूध का प्रयोग करेंगे तो आप दूध को उच्च तापमान पर गर्म करने के, पहले चरण से बच सकते हैं, क्योंकि दूध डिब्बे में सील होने से पूर्व ही इस तापमान पर गर्म किया जा चुका है।
- चौथाई अथवा आधा कप रिकम (वसा मुक्त) दूध पाउडर (एच्छिक)
- जीवाणुओं के उचित संवर्द्धन हेतु एक चम्मच चीनी एवं एक चुटकी नमक।
- दो चम्मच दही(स्टार्टर)। आप जमा कर सुखायें गए, फ्रीज-ड्राई मानक जीवाणु कल्चर का भी प्रयोग कर सकते हैं। अच्छे जीवाणुओं से बना दही रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है तथा भोजन से होने वाली एलर्जी को कम करता है।

### विधि —

- 1) आप किसी भी प्रकार के दूध का प्रयोग कर सकते हैं— सम्पूर्ण दूध, 2 प्रतिशत फ़ैट, 1 प्रतिशत फ़ैट, वसा रहित, पाइश्चुराइज्ड, समानीकृत टॉड

दूध, जैविक दूध, कच्चा दूध, पानी मिला, सूखा पाउडरीकृत, गाय का दूध। अत्यंत उच्च पाइश्चुराइज्ड (यू.एच.पी.) दूध ऊंचे तापमान तक प्रसंस्कृत किया जाता है जिसके कारण कुछ ऐसे प्रोटीन टूट जाते हैं जिनसे जीवाणुओं को दूध को दही में परिवर्तित करने के लिए होती है।

- 2) दूध को पहले 60 डिग्री सेंटीग्रेड पर गरम करके समिश्रक की सहायता से अच्छी तरह हिलाएं। ऐसा करने से दही जमाने समय मिल्क फ़ैट ऊपर परत कम बनाते हैं और दही एक समान जमता है।
- 3) उसके बाद दूध को बीच बीच में हिलाते हुए 85 डिग्री सेंटीग्रेड तक गरम करें। दूध गरम करने से मिल्क प्रोटीन टूट जाते हैं और दूध गाढ़ा जमता है। दूध में से एयर(हवा) और अन्य जीवाणु समाप्त होकर दही के जीवाणुओं को बढ़ाने में सहायक होते हैं। दो ऐसे बड़े बर्तनों का, जो एक के अंदर एक आ जाएँ, प्रयोग कर, एक दोहरी भट्टी बनाएँ। गर्म पानी का ताप देते हुए दूध गर्म करें तो बेहतर होगा क्योंकि यह आपके दूध को बर्तन के पेंदे में जलने से बचाएगा तथा आपको केवल उसको समय समय पर हिलाना होगा। यदि आपके पास तापमापक नहीं है तो 85 डिग्री सेंटीग्रेड वह तापमान है जिस पर दूध झाग उठाने लगता है।
- 4) दूध को 43 डिग्री सेंटीग्रेड तक ठंडा करें। इसकी सर्वोत्तम विधि है ठंडे पानी का स्नान। यह जल्दी से और समरूप से तापमान कम करेगा एवं कभी कभी ही इसे हिलाना पड़ेगा। यदि कमरे के तापमान पर अथवा रेफ्रीजरेटर में ठंडा करेंगे तो जल्दी जल्दी हिलाना पड़ेगा। दूध के 49 डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे आने तक कुछ ना करें, और उसको 32 डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे न आने दें। 43 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान जामन लगाने के लिए सबसे सही तापमान है।
- 5) पहली बार जब आप अपना दही जमाएं तब दुकान से खरीदा हुआ सादा (सुगंधहीन) दही ही जामन के लिए प्रयोग करें। सुरक्षित रखे दही के जामन/स्टार्टर को हल्का गरम करें फिर 25 डिग्री सेंटीग्रेड पर ठंडा कर लें। जामन वह जीवाणु का कल्चर है जिसे आप दूध में मिलाते हैं, जो बाद में और जीवाणुओं को विकसित करता है — वे जीवाणु, जो दही उत्पन्न करने के लिए आवश्यक होते हैं। जब तक आप दूध के ठंडा होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं तब तक जामन के दही को कमरे के तापमान तक ठंडा होने दें। इससे वह मिलाये जाने तक बहुत ठंडा नहीं हो जाएगा।
- 6) यदि चाहें तो दूध में वसा रहित सूखा दूध डालें। इस समय चौथाई कप से आधा कप वसा रहित सूखा दूध डालने से दही की पौष्टिकता बढ़ जाएगी। दही अधिक आसानी से गाढ़ा भी हो जाएगा। यह विशेष रूप से तब सहायक होता है जब आप वसा रहित दूध का प्रयोग कर रहे हों।
- 7) दूध में जामन मिलाएँ— 2 चम्मच उपलब्ध दही अथवा जमा कर सुखाया गया जीवाणु मिलाएं। एक से डेढ़ प्रतिशत की दर से स्टार्टर हिला कर मिलाएँ अथवा समिश्रक का उपयोग कर जीवाणुओं को दूध में समरूपता से मिलाएं।
- 8) मिश्रण को साफ बर्तनों में डालें। प्रत्येक को ढक्कन से कस कर अथवा प्लास्टिक से लपेट दें। यदि आप चाहें तो मर्तबानों का प्रयोग भी कर सकते हैं, वैसे यह आवश्यक नहीं है।
- 9) दही के जीवाणुओं का सेचन होने दीजिये इसलिए यथासंभव तापमान को 37-38 डिग्री सेंटीग्रेड तक रख कर, जीवाणु वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए, दही को गर्म रखिए। जितनी देर तक मिश्रण सेया जाएगा दही उतना ही गाढ़ा तथा अधिक खट्टा होगा। जमाने के दौरान दही को स्थिर रखें। हिलने से वह खराब तो नहीं होगा परंतु जमाने में समय अधिक लगेगा।
- 10) सात घंटों के उपरांत कस्टर्ड जैसी बनावट, पनीर जैसी महक तथा ऊपर संभवतः हरीतिमा लिए द्रव आपको मिलेगा। सात घंटों से जितना अधिक आप उसको जमाने देंगे, उतना ही वह गाढ़ा और खट्टा हो जाएगा।





- 11) ध्यान रखें कि सूरज की सीधी रोशनी और धूप दूध की पौष्टिकता को कम कर देती है। तापमान को 37-39 डिग्री पर बनाए रखना सर्वोत्तम है, उसे 32 डिग्री से नीचे न जाने दें। वैसे आप दही के बर्तन को गरम पानी की हौदी में, बड़े बर्तन में समुचित गर्म पानी भर कर भी रख सकते हैं।
- 12) सुनिश्चित करें कि आपका दही तैयार है— बर्तन को धीरे से हिलाएँ— तैयार होने पर दही नहीं हिलेगा और तब आप उसको रेफ्रिजरेटर में रख कर सात दिन तक सुरक्षित रख सकते हैं।

### गौदधि (गाय के दूध से बनाया गया दही)

कायचिकित्सा आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ भावप्रकाश में गौदधि के गुणों का वर्णन इस प्रकार है—

**गव्यं दधि विशेषेण स्वादवम्लम् च रुचिप्रदम् ।**

**पवित्रं दीपनं हृदयं पुष्टिकृत् पवनापहम् ॥**

**उक्तं दध्नामशेषाणाम् मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ॥**

अर्थात्, गाय के दूध का दही अन्य सभी दही से अधिक गुणकारी, रुचिकर एवं खट्टे स्वाद का, पुष्टिकर (बलकारक), अग्नि (जठराग्नि) को दीप्त करने वाला पौष्टिक एवं वातनाशक है।

- गाय के दही से बने मट्टे (छाछ) में जल, सेंधा लवण, राई एवं हल्दी के योग से गौतक्रासव बनाया जाता है जो कब्जीयत दूर करके बवासीर में अत्यंत लाभकारी है। पाचन तंत्र के रोगों यथा, एसिडिटी, अपच, आफरा, गैस एवं भूख न लगने की समस्याओं में लाभकारी है।
- दही एवं छाछ में भरपूर कैल्शियम होता है और विटामिन डी भी होता है। दही जमी हुई होने के कारण एवं लैक्टिक अम्ल की उपस्थिति के कारण दही/छाछ में से कैल्शियम अधिक आसानी से अवशोषित होता है।
- गर्मियों के दिनों में ठंडी छाछ बाजार में बिकने वाले हानिकारक कैफीन युक्त शीतल पेयों से कहीं अधिक राहत एवं संतुष्टि देने वाला, प्यास बुझाने वाला स्वास्थ्यवर्द्धक पेय है।
- दही एवं छाछ में पाया जाने वाला बैक्टीरिया लैक्टोबैसिलस एसिडोफिलस आँतों में लाभदायक बैक्टीरिया के रूप में, प्रोबायोटिक के रूप में गुणकारी है।
- नवजात बछड़ों में दस्त लगने पर भी छाछ का प्रयोग लाभदायक होता है।
- मक्खन निकालने के बाद बचे मट्टे को, दुधारु जानवर को दूध बढ़ाने के लिए और बैलों में ताकत बढ़ाने के लिए पिलाते हैं।

भारत में गाय को माता कहा जाता है। भारतीय गोवंश मानव का पोषण करता रहा है, जिसका दूध, गोमूत्र और गोबर अतुलनीय है। सुख-समृद्धि की प्रतीक रही भारतीय गाय आज गोशालाओं में भी उपेक्षित है। अधिक दूध के लिए विदेशी गायों को पाला जा रहा है, जबकि भारतीय नस्ल की गायें आज भी सर्वाधिक दूध देती हैं। ब्राजील में भारतीय गोवंश की नस्लें सर्वाधिक दूध दे रही हैं। देसी गाय कम खाकर भी उत्कृष्ट गव्य 'पंचगव्य' प्रदान करती है। देसी गाय दुधारु अगर नहीं भी हो तब भी अपने गौमूत्र व गोमय से लाभ देती है। गौ-चिकित्सा/पंचगव्य की मानी हुई आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को आज भी अधिकांश लोग चमत्कार, मिथक या पौराणिक मान कर खारिज कर रहे हैं और उसके लाभ से वंचित हैं। किन्तु, हाल के वर्षों में विश्व के वैज्ञानिक समुदाय में भारतीय तकनीकी जानकारी के विकार या उसकी वैज्ञानिक वैधता स्थापित करने में रुचि पैदा हुई है ताकि एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में उसका विकास किया जा सके। आधुनिक ऐलोपैथिक दवाओं के प्रति सूक्ष्मजीवों में बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता, दवाओं के भोजन श्रृंखला में अवशेषों के दुष्प्रभावों ने सभी को चिंतित किया है। इसलिए औषध विज्ञान, कृषि, फार्मास्यूटिकल, तकनीक के क्षेत्रों में इस पर मिल-जुल कर प्राथमिकता के आधार पर काम किया जाये तो हमें पंचगव्य उत्पादों के रूप में नयी पीढ़ी के लिए नए चिकित्सकीय साधन प्राप्त हो सकते हैं।

**डॉ. अशोक गौड़, डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा व प्रो. ए.पी. सिंह**  
पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय, राजुवास, बीकानेर

## जुलाई माह में पशुओं को गलघोंटू से कैसे बचायें

मई-जून माह में तेज गर्मी के बाद मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश में समय पर मानसून आने की संभावना है। जिसके अनुसार जुलाई माह के प्रथम सप्ताह से राजस्थान के कुछ हिस्सों में वर्षा हो सकती है। प्रथम कुछ बरसातों के बाद वातावरण में नमी बढ़ जाती है लेकिन गर्मी का प्रभाव कम नहीं होता है। इस अवस्था में पशुओं में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। इस तनाव से सबसे ज्यादा पशु जो प्रभावित होते हैं उनमें मुख्य रूप से बोज़ा ढोने वाले व जुताई में काम आने वाले पशु हैं। वातावरण के इस प्रभाव से तनावग्रस्त पशु गलघोंटू रोग के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होता है। यह एक जीवाणु जनित रोग है जिससे प्रभावित होने से पशु की 2-3 घंटे में मृत्यु होना आम बात है। इस रोग में पशु सुस्त हो जाता है, उसे तेज बुखार आता है, सांस में तकलीफ होती है, गले में सूजन आ जाती है और पशु तेज घर-घर की आवाज करता है। इन लक्षणों के आधार पर गलघोंटू को आसानी से पहचाना जा सकता है। यदि पशु को तुरंत चिकित्सकीय सहायता मिल जाए तो उसे मरने से बचाया जा सकता है। चूंकि दूर-दराज के इलाकों में इतने अल्पसमय में चिकित्सकीय सहायता मिलने की संभावना बहुत कम होती है। अतः पशुपालकों को चाहिए कि इस रोग से बचाव के लिए उपलब्ध टीके जुलाई माह से पूर्व लगवा ले और अपने पशु का बचाव करें। यदि गलघोंटू के टीके अपने पशुओं को नहीं लगवाए हैं तो पशुपालक अभी भी गलघोंटू के लिए टीकाकरण करवा सकते हैं। टीकाकरण के अतिरिक्त पशुपालकों को चाहिए कि ज्यादा नमी व गर्मी के समय अपने पशुओं से ज्यादा वजन ढुलाई या खेत में जुताई के काम ना लें और उन्हें पर्याप्त आराम दें।

- प्रो. ए. के. कटारिया

प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेंटर, राजुवास (मो. 9460073909)

## देशी मुर्गों की नस्ल को जानें

### फ्रिज्जल मुर्गा-मुर्गी

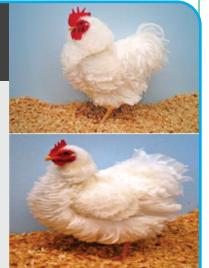
इसका शरीर अंडाकार होता है तथा कलंगी अच्छी तरह से विकसित होती है। त्वचा पतली और गुलाबी रंग की होती है जिसमें पीले रंग का सम्मिश्रण होता है। चोंच और टांगों का आम तौर पर पंख के रंग के साथ कोई संबंध नहीं है। इसके पंखों का रंग हल्का मलाईदार होता है। आंखें उज्ज्वल और अच्छी तरह से विकसित होती हैं। अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह सहित सभी गर्म और आर्द्र तटीय क्षेत्रों में यह पक्षी पाए जाते हैं। इन पक्षियों की अच्छी संख्या उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा पहाड़ी इलाकों की ऊंचाई पर उपलब्ध है। ऐसा कहा जाता है कि इन पक्षियों की गर्म और नम जलवायु परिस्थितियों में बेहतर अनुकूलन क्षमता है।

#### 1 फ्रिज्जल मुर्ग की सामान्य विशिष्टताएं

20 हफ्तों में वजन : 1005 ग्राम एवं यौन परिपक्वता पर आयु: 185 दिन

#### 2 फ्रिज्जल मुर्गी की सामान्य विशिष्टताएं

वार्षिक अंडा उत्पादन: 110 अंडे एवं 60 से 80 के बीच अण्डे देती है तथा 40 हफ्तों में अंडे का वजन : 53 ग्राम



## अंडे की पौष्टिकता : कुछ तथ्य व भ्रांतियाँ

अंडा एक पौष्टिक एवं शुद्ध आहार है। अंडे में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो एक आम व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। अंडे में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन एवं खनिज लवण पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहता है। विटामिन "सी" के अतिरिक्त सभी विटामिन अंडे में पाये जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम आधे अंडे का सेवन प्रतिदिन करना चाहिए। यह खेद का विषय है कि हमारे देश में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष अंडे की खपत विकसित या विकासशील देशों की तुलना में (औसत 180 अंडे प्रति व्यक्ति) काफी कम है।

### अंडे के प्रति भ्रांतियाँ या प्रतिकूल धारणाएँ

**अंडा एक मांसाहारी आहार है एवं इसका सेवन वर्जित है** – आम जन के बीच सामान्यतः अभी भी यह भ्रांति मौजूद है कि मादा मुर्गियां नर की अनुपस्थिति में अंडे नहीं दे सकती है। यह बिल्कुल असत्य है। व्यावसायिक कुक्कुट प्रक्षेत्रों में केवल मादा मुर्गियों को रखा जाता है। जैसे ही मादा मुर्गी प्रौढ़ावस्था में आती है प्रत्येक 30–32 घंटे में एक अंडा देती है। इन अंडों में भ्रूण विकसित नहीं होते हैं यह अंडा जीवरहित होता है। अतः इसका सेवन अमानवीय या पाप नहीं है। गांधी जी ने स्वयं कहा था कि "जिस तरह दूध शाकाहारी प्रोटीन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है उसी तरह अंडे का भी शाकाहारी प्रोटीन के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए"।

**अंडे अधिक गर्मी उत्पन्न करते हैं** – कुछ लोगों का विश्वास है कि अंडे का सेवन शरीर में ज्यादा गर्मी उत्पन्न करता है। यह एक गलत धारणा है। अंडे में प्रोटीन अधिक होने के बावजूद इससे ऊर्जा कम मात्रा में प्राप्त होती है। एक अंडे से केवल 81 किलो कैलोरी ऊर्जा मिलती है। जबकि इतने ही वजन के दाल से 300 किलो कैलोरी ऊर्जा मिलती है। अतः अंडा सभी मौसम के लिये एक उपयुक्त आहार है। यह उन लोगों के लिए भी उत्तम है जो अधिक प्रोटीन एवं कम ऊर्जा युक्त आहार लेना पसंद करते हैं।

**देशी मुर्गी का अंडा उन्नत नस्ल की मुर्गी के अंडे से ज्यादा पौष्टिक होता है** – अंडे के रंग एवं आकार को छोड़ उसका कोई भी गुण मुर्गियों की प्रजाति से प्रभावित नहीं होता है। देशी मुर्गी का अंडा भूरे छिलके वाला होता है। छिलके का भूरा रंग उसमें उपस्थित लौह युक्त कण उपोरफायरिन (Ooporphyrin) तथा उसायनेन (Oocynane) की वजह से होता है। इससे अंडे की पौष्टिकता में कोई फर्क नहीं पड़ता है। देशी मुर्गियां घूम-घूम कर भोजन ढूँढ़ती हैं अतः इनके अंडे से एक विशेष प्रकार की गंध आती है। इस गंध से उसकी पौष्टिकता में कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत देशी मुर्गी के अंडे की तुलना में फार्म के मुर्गी के अंडे का वजन अधिक होता है अतः इसमें पौष्टिक तत्वों की मात्रा भी उसी अनुपात में अधिक होती है। फलस्वरूप देशी मुर्गी के अंडे का क्रय आर्थिक रूप से लाभप्रद नहीं है। कुछ व्यापारी छोटे आकार के फार्म अंडों को ज्यादा दाम में बेचने के प्रयास में उसे गाढ़े चाय के घोल में डुबो देते हैं, इससे उसके छिलके का रंग देशी अंडे जैसा हो जाता है, इस तरह लोगों की अज्ञानता का गलत फायदा उठाया जाता है।

**कच्चा अंडा, उबले अंडे से ज्यादा पौष्टिक होता है** – अंडे को सदैव उबालकर ही सेवन करना चाहिए। अंडे की सतह में उपस्थित जीवाणु कभी-कभी अंडे में प्रवेश कर जाते हैं। किन्तु अंडे के सफेद भाग की रोग प्रतिरोधक क्षमता (Lysozyme and Ovoinhibitor) के कारण नष्ट हो जाते हैं। अंडा एक ऐसा पदार्थ है जो कमरे के ताप पर दो सप्ताह तक सुरक्षित रखा जा सकता है जबकि दूध या मांस 12 घंटे में ही नष्ट हो जाते हैं। अंडे को फ्रिज में रखने से उनके सतह में उपस्थित जीवाणु की संख्या न्यूनतम



हो जाती है। अंडे को उबालने से हानिकारक जीवाणु पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। कच्चे अंडे के सेवन से उसमें उपस्थित जीवाणु शरीर को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अलावा कच्चे अंडे में ऐसे अवयव पाये जाते हैं जो शरीर की पाचन क्रिया को प्रभावित कर सकते हैं।

**अंडे में काफी मात्रा में कोलेस्ट्रॉल पाया जाता है, अतः इसके सेवन से हृदय संबंधी रोग होने की संभावना होती है** – कोलेस्ट्रॉल शरीर की विभिन्न कोशिकाओं का अभिन्न अंग है। कोलेस्ट्रॉल विभिन्न हार्मोन एवं पित्त की रचना में प्रमुख भूमिका निभाता है। यह शरीर में चयापचय एवं पाचन क्रियाओं में मदद करता है। कोलेस्ट्रॉल की आहार में उपस्थिति आवश्यक नहीं है। चूंकि प्रतिदिन शरीर द्वारा करीब 2 ग्राम कोलेस्ट्रॉल का निर्माण होता है जो शरीर की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यदि आहार में उसकी मात्रा बढ़ा दी जाये तो शरीर में इसका उत्पादन कम हो जाता है। इस तरह संतुलन सदा बना रहता है। पहले कुछ वैज्ञानिकों का मत था कि अधिक मात्रा में अंडे के सेवन से रक्त कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ती है। किन्तु बाद में यह बात साबित हुई है कि अधिक अंडे से नहीं बल्कि अधिक ऊर्जायुक्त आहार से रक्त कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ जाती है। आहार के अलावा दूसरे कारक जो रक्त कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाते हैं उनमें एक प्रमुख "पैतृक गुण" है जिसकी वजह से यह दशा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। दूसरा प्रमुख कारक "उम्र" है जैसे उम्र बढ़ती है रक्त कोलेस्ट्रॉल की मात्रा भी बढ़ती है। धूम्रपान, मद्यपान, मधुमेह, पीलिया, गुर्दे का रोग, अत्यधिक चिंता, व्यायाम की कमी, मोटापा इत्यादि कारक रक्त कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाते हैं। अतः कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए आहार में ऊर्जा का स्तर कम करने के अलावा उपरोक्त बातों को ध्यान में रखना चाहिए। हमारे पास कोई वैज्ञानिक या तार्किक कारण नहीं है जो अंडे के सेवन के प्रतिकूल हो। यह सर्वविदित है कि अंडा सर्वाधिक पौष्टिक एवं प्राकृतिक आहार है। इसमें उपस्थित प्रोटीन उच्च कोटि का माना जाता है। यह बच्चों, वृद्धों एवं मरीजों द्वारा भी आसानी से पचा लिया जाता है। जापान के वैज्ञानिकों के एक नवीन अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि अंडे में दो तत्व ल्यूमी-पलेवीन एवं ल्यूमी-क्रोम (Lumi-flavin and Lumi-chrome) पाये जाते हैं जो कैंसर के विषाणु को बढ़ने से रोकते हैं एवं सामान्य कोशिकाओं को कैंसर युक्त कोशिकाओं में बदलने में भी बाधा उत्पन्न करते हैं। इसके बावजूद भी लोग यदि कोलेस्ट्रॉल के डर से अंडे का सेवन नहीं करते तो उनके लिए अमेरिकन वैज्ञानिकों ने एक विधि तैयार की है जिससे अंडे में उपस्थित कोलेस्ट्रॉल को अंडे से पृथक कर सकते हैं।

—प्रो (डॉ.) बसंत बैस, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।





## सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-जुलाई, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह-खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	बाँसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर,, दौसा, झुंझुनू, सवाई माधोपुर, अलवर, सिरोही, बाड़मेर, चूरू, अजमेर, सीकर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, नागौर, अजमेर, कोटा, पाली, सिरोही, जोधपुर
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़, जोधपुर
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, भरतपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग (लंगड़ा बुखार)	गौवंश, भैंस	जयपुर, बीकानेर, झुंझुनू, अलवर, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, सीकर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, अलवर, नागौर, धौलपुर, झुंझुनू, अजमेर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, कोटा, बून्दी, भरतपुर
थाइलेरिओसिस, बबेसिओसिस	गौवंश	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बून्दी, चूरू
अन्तः परजीवी (गोल-कृमि एवं फीता -कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, ऊँट	बीकानेर, सीकर, धौलपुर, अलवर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमन्द, भरतपुर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर।  
फोन- 0151-2204123, 2544243, 2201183

### सफलता की कहानी

### प्रेरणादायक है मीरसिंह का

“जय जवान से जय किसान तक का सफर”

कहते हैं सपने देखने एवं उन्हें पूरा करने की कोई उम्र नहीं होती। यही साबित किया है, गांव सुरतपुरा, तह. राजगढ़, जिला चूरू के 55 वर्षीय मीरसिंह पुत्र डीगसिंह जाट ने। सेना से सेवानिवृत्ति पश्चात् बिना समय गंवाये कृषि एवं पशुपालन से जुड़े, जिसमें उनकी शुरु से ही रुचि थी। वर्तमान में इनके पास 15 उन्नत मुरा नस्ल की भैंस हैं, इनसे ये प्रतिदिन 80 लीटर दूध तथा मासिक आय करीब तीस हजार रुपये प्राप्त करते हैं। ये पशुओं के गोबर को वर्मीकम्पोस्ट से अच्छी खाद में बदल कर खेती हेतु उपयोग में लेते हैं। ये खेती में रासायनिक खादों के उपयोग को उचित नहीं मानते। ये बताते हैं कि पशुपालन के लिए इनकी पुत्रियां सरोज व सरिता जो कि दोनों पोस्टग्रेज्युएट हैं, न केवल प्रेरक हैं बल्कि इस व्यवसाय में उनकी सहायता भी करती है। इन्हें खनिज लवणों की उपयोगिता, उन्नत नस्ल प्रबन्धन, डीवर्मींग, सन्तुलित आहार, टीकाकरण एवं पशुओं में होने वाली मौसमी बीमारियों की आधारभूत जानकारी है। इसके अलावा ये अन्य उन्नत तकनीकों की



जानकारी हेतु पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू के निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं। ये अपने पशुओं का नियमित रूप से टीकाकरण, डीवर्मींग तथा पशु चिकित्सालयों से प्राप्त खनिज लवणों का उपयोग करते हैं। इनका कहना है कि डेयरी व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का अच्छा जरिया बन सकता है। ये युवा पीढ़ी को बताना चाहते हैं कि दूर दराज शहरों में प्राइवेट कम्पनियों के नौकर बनने से बेहतर है कि प्रशिक्षण द्वारा उन्नत पशुपालन अपना कर अपने मालिक स्वयं बनें। सम्पर्क – मीरसिंह, (मो.8003110860) ग्राम पो. सुरतपुरा, जिला चूरू



## निदेशक की कलम से...

### ब्रॉयलर पालन है, एक सरल आय का जरिया

हमारे देश में मुर्गीपालन तेजी से आगे बढ़ रहा है क्योंकि यह कम लागत और समय में एक अच्छा व्यवसाय सिद्ध हो रहा है। बेरोजगार नवयुवकों और कमजोर आय वाले वर्ग के लोगों के लिए यह एक नियमित आय प्राप्त करने का जरिया बन गया है। ऐसे मुर्गे जिन्हें सिर्फ मीट उत्पादन के लिए पाला जाता है "ब्रॉयलर" कहलाते हैं। मुर्गीपालकों को इससे अधिक मुनाफा प्राप्त होता है क्योंकि ब्रॉयलर उत्पादन के लिए चूजे 40-45 दिनों में ही तैयार हो जाते हैं जब कि अण्डा उत्पादन के लिए तैयार होने में मुर्गियों को साढ़े पांच महीने तक का समय लग जाता है। ब्रॉयलर खास किस्म के मुर्गे होते हैं जिसकी शारीरिक बढत बहुत तेजी से होती है। इसमें ज्यादा खर्चा भी नहीं आता है और कुछ ही दिनों में बिक्री भी शुरू हो जाती है। एक पक्षी लगभग 70 रूपये में तैयार हो जाता है जिससे 1 किलोग्राम मीट मिलता है। ब्रॉयलर पालन में चूजों का चुनाव महत्वपूर्ण होता है। चुस्त, फुर्तीले, चमकदार आंखों वाले तथा समान आकार के चूजे उत्तम होते हैं। ये किसी भी मान्यता प्राप्त व्यक्तिगत अथवा सरकारी संस्था से खरीदे जा सकते हैं। चूजों के लिए तापमान का प्रबंधन जरूरी है। गर्मी ज्यादा पड़ने पर बाड़े में कूलर की व्यवस्था कर नए चूजों के लिए शुरुआत में दो-तीन दिनों तक बाड़े का तापमान 33 डिग्री सेन्टीग्रेड और इस अवस्था के बाद 21 डिग्री सेन्टीग्रेड बनाए रखना होता है। अतः 50 से 60 प्रतिशत से ज्यादा आर्द्रता होने पर उनका बिछावन समय-समय पर बदलना चाहिए। हवा का आवागमन बहुत आवश्यक है। आवास में प्रकाश का प्रबंध बल्ब से किया जाता है। 23 घंटे लगातार बाड़े में प्रकाश बनाए रखें सिर्फ एक घंटा अंधेरा रखें। शुरुआत के 15 दिन तक 200 वर्ग फीट आकार के कमरे में 40-60 वॉट का बल्ब और इसके बाद 15 वॉट का बल्ब प्रकाश के लिए पर्याप्त है। ब्रॉयलर को शुरु में दिया जाने वाला आहार 'स्टार्टर' कहलाता है। बाड़े में रखने के 4 सप्ताह में करीब 23 प्रतिशत प्रोटीन और करीब 3000 कैलोरी ऊर्जा होती है। इससे वजन तेजी से बढ़ता है। चार सप्ताह के बाद से 'फिनिशर' आहार दिया जाता है जिसमें प्रोटीन की मात्रा घटा दी जाती है लेकिन ऊर्जा की मात्रा में परिवर्तन नहीं होता। ब्रॉयलर का टीकाकरण करवाना सबसे आवश्यक है क्योंकि इससे मुर्गे गंभीर बीमारियों से बचे रहते हैं। सबसे पहले मैरेक्स टीका लगवाना चाहिए क्योंकि यह संक्रामक रोग चूजों को ही लगता है। इस रोग के प्रकोप से उनकी टांगे और गर्दन कमजोर हो जाती है। -**प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो: 9414139188**

### राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित "धीणे री बात्यां" कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरुवार को प्रसारित "धीणे री बात्यां" के अन्तर्गत जुलाई, 2018 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरुवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरुवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर साय: 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

### मुस्कान !



क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. ए.पी. सिंह निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	राजस्थान में किसानों दुगुनी आय के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों का महत्व	05.07.2018
2	डॉ. दिनेश जैन पशुपोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बरसात के मौसम में मुर्गीयों की देखरेख	12.07.2018
3	डॉ. तारा बोथरा पशुधन उत्पादन प्रबंधन	भेड़-बकरी पालन एक लाभदायक व्यवसाय	19.07.2018
4	डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा निदेशालय प्रसार शिक्षा राजुवास, बीकानेर	प्रसार शिक्षा से किसानों की आय में होने वाली वृद्धि	26.07.2018

#### संपादक

प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

सह संपादक

प्रो. ए. के. कटारिया

प्रो. उर्मिला पानू

डॉ. नीरज कुमार शर्मा

दिनेश चन्द्र सक्सेना

संयुक्त निदेशक ( जनसम्पर्क ) से.नि.

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें।



1800 180 6224